International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: (RJIF 5.22)
www.newresearchjournal.com/academic
Volume 1; Issue 3; March 2016; Page No. 74-77

वेदव्यास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

श्याम सुन्दर शर्मा
शोध छात्र, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली - 110007

सारांश
मानवीय सभ्यता को व्यास द्वारा प्रदत्त योगदान के कारण संस्कृत जगत् में ही नहिं अपितु सम्पूर्ण मानवीय संसार में इनका सर्वाधिक सम्माननीय स्थान है। वैदुष्य परिपूर्ण सर्वाधिक ग्रन्थों का निर्माण करने का श्रेय इन्हें ही जाता है। व्यास को विरासत में श्रौत परम्परा मिली थी, इन्होंने उसे लेखन परम्परा मे परिवर्तित कर दिया। एतदर्थ माना जाता है कि व्यास ने ही लेखनपद्धति का आरम्भ किया तथा संस्कृत की वैदिक एवं लौकिक इन द्विविध धाराओं के पथ को प्रदर्शित किया है।
इस शोधपत्र में व्यास के वैयक्तिक जीवन से सम्बन्धित तथ्यों को प्रस्तुत किया गया है तथा व्यास ने जिन कालजयी कृतियों का सृजन किया है, उनसे सम्बन्धित विविध पक्षों का अन्वेषण किया गया है।

मूल शब्दः लेखनपद्धति की आरम्भिक संरचना, वैदिक ज्ञान का परिमाप एवं वर्तमान में उसकी उपलब्धता, स्मृति दिवस की सङ्कल्पना का उदय

1. प्रस्तावना

इस लोक मे वेदव्यास का प्रादुर्भाव आषाढ़ मास की पूर्णिमा को हुआ था। एतदर्थ भारतीय ज्ञान परम्परा आषाढ़ माष की पूर्णिमा को गुरुपूर्णिमा संज्ञा से उसी प्रकार अभिहित करती है, जिस प्रकार से भारत सरकार, भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति (1952-62) तथा द्वितीय राष्ट्रपति (1962-67) डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के जन्मदिवस 05 सितम्बर को शिक्षक दिवस के नाम से अभिहित करती है। आज भारतीय कलेण्डर में दो दिवस (05 सितम्बर और गुरुपूर्णिमा) ऐसे हैं, जब हम ज्ञानपुञ्ज प्रकाशक के प्रति अपनी श्रद्धा प्रदर्शित करते हैं।
यह एक अविस्मरणीय संयोग है कि इसी आषाढ़ मास की पूर्णिमा को भगवान् गौतम बुद्ध (563 ई. पू.) को 35 वर्ष की आयु मे बिहारस्थ गया के उरुवेला नामक स्थान पर पीपल वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। इस घटना को बौद्ध साहित्य 'सम्बोधि' नाम से परिभाषित करता है। बौद्ध सम्प्रदाय इस पूर्णिमा को गुरु वन्दन महोत्सव के रूप में मना कर भारतीय संस्कृति का विस्तार करता है। अत: इस आषाढ़ पूर्णिमा का महत्त्व मात्र हिन्दू सम्प्रदाय से न होकर बौद्ध सम्प्रदाय से भी है। एतदर्थ पूर्णिमा महोत्सव का भौगोलिक स्थल भारत की क्षेत्रीय सीमा को अतिक्रान्त कर के अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे पहुँच कर दक्षिणी एशिया को परिव्याप्त कर लेता है।

2. वेदव्यास का व्यक्तित्व

चेदिराज वसु उपरिचर के पितृत्व में सत्यवती नामिका कन्या का जन्म हुआ था। इसका लालन-पालन मल्लराज दास के द्वारा सम्पादित किया गया था। कालान्तर में सत्यवती तथा पाराशर के संयोग से यमुना के किसी अज्ञात द्वीप पर व्यास का जन्म होता है। व्यास का लालन-पालन पाराशर आश्रम में किया गया।
प्रारम्भ में एक ही वेद 'ऋग्वेद' था। जिसे व्यास ने अपने अति महत्त्वपूर्ण प्रयास से चार कर दिया। इसी कारण इनका नाम 'व्यास' पड़ा। इन्होंने वेद का व्यास (परिवर्धन) किया एतदर्थ ये 'वेदव्यास' नाम से अभिहित हुए। वेदव्यास इनका वैयक्तिक नाम न होकर कृतित्व नाम है। इनका जन्म एक द्वीप में हुआ, अत: ये 'द्वैपायन' तथा कृष्णवर्ण होने से 'कृष्णद्वैपायन' कहलाए। बदरिका तपोवन में तप करने से ये 'बादरायण' तथा पाराशर पुत्र होने से ये 'पाराशरि' कहलाए। अभी तक के शोध अध्ययन से वेद व्यास का वैयक्तिक नाम ज्ञात नहीं किया जा सका है। यह क्षोभप्रद तथ्य है।

3. वेदव्यास का काल

सप्त चिरञ्जीविओं में लब्धस्थान वेदव्यास का कालनिर्धारण बहुत ही दुष्कर कार्य है। जहाँ भारतीय ज्ञान मनीषा अकाट्य प्रमाणों से इन्हें प्राचीन से प्राचीनतम घोषित करने का प्रयास करती है। वहीं अभारतीय बौद्धिक प्रतिभा इन्हे नवीन से नवीनतम घोषित करने का प्रयास करती है। तथ्यों के आधार पर भारतीय ज्ञान मनीषा वेदव्यास का काल ईशा पूर्व छठी शताब्दी से ईशा पूर्व पाँचवी शताब्दी निर्धारित करती है। यह असन्दिग्ध तथ्य है कि वेदव्यास का अस्तित्व महाभारत काल में था। ये पाण्डवों के परामर्शदाता थे। अठारह दिवस पर्यन्त चलने वाले महाभारत युद्ध में लोहा धातु का उपयोग अस्त्र-शस्त्र के रूप मे किया गया था। उपलब्ध प्राचीनतम लोहखण्ड C-14 नामक वैज्ञानिक काल निर्धारक विधि से ईशा पूर्व 6वीं शताब्दी ठहरता है। अत: अभारतीय

बौद्धिक प्रतिभा वेदव्यास का अधिकतम काल काल ईशा पूर्व 6वीं शताब्दी मानती है। यदि हमें महाभारत कालीन कोई ऐसी वस्तु मिले जिसे C-14 नामक वैज्ञानिक काल निर्धारक विधि से परीक्षण करने पर उसका काल और भी अधिक प्राचीन निकले, तो वैज्ञानिक रूप से हम वेदव्यास को और भी प्राचीन सिद्ध कर सकते हैं।

4. वेदव्यास का कृतित्व

वेदव्यास अपने कृतित्व पक्ष के कारण जगत्प्रसिद्धि को प्राप्त हुए हैं। वेदव्यास ने प्रथमत: वेदों का परिवर्धन तथा लिपिबद्धीकरण किया। द्वितीयत: महाभारत का सृजन किया। तृतीयत: अष्टादश पुराण तथा अष्टादश उपपुराणों का निर्माण किया। अन्तिम में ब्रह्मसूत्र की रचना की।

4.1 ऋग्वेद

वेदव्यास ने ऋग्वेद को लिपिबद्धीकृत करके अपने प्रिय शिष्य पैल को अध्ययन कराया था। ऋग्वेद के ऋत्विज् 'होता', देवता (प्रमुख स्तुत्य) 'इन्द्र', दृष्टा (मन्त्र साक्षात्कर्ता) 'पैल' हैं। ऋग्वेद के मन्त्रों का स्वरूप 'ज्ञानात्मक' है।

संस्कृत व्याकरण के महाभाष्यकार पतञ्जलि (150 ई. पू.) के अनुसार उनके समय में ऋग्वेद की इक्कीस शाखाएँ (भाग) उपलब्ध थीं। परन्तु दुर्भाग्य से आज हम मात्र पाँच शाखाओं (शाकल, वाष्कल, आश्वलायन, शाङ्ख्यायन, माण्डूक्यायन) के नाम जानते हैं। अन्य सोलह शाखाओं के नाम भी अज्ञात हैं। आज मात्र एक शाकल शाखा उपलब्ध होती है। अन्य बीस शाखाएँ अनुपलब्ध हैं। इस शाकल शाखा को दो प्रकार से विभाजित किया गया है। प्रथम विभाजन के अनुसार इसमे 10 मण्डल, 85 अनुवाक्, 1028 सूक्त, 10580 ¼ मन्त्र, 1,53,826 शब्द तथा 4,32000 अक्षर हैं। द्वितीय विभाजन के अनुसार इसमे 8 अष्टक, 64 अध्याय (8×8) तथा 2006 वर्ग हैं। ऋग्वेद से सम्बन्धित उपवेद आयुर्वेद है। इसके प्रवर्तक धन्वन्तरी हैं। ब्रह्मा ने इन्द्र, इन्द्र ने भारद्वाज, भारद्वाज ने अग्निवेश तथा दिवोदास को आयुर्वेद का अध्ययन कराया था। अग्निवेश तथा दिवोदास ही धन्वन्तरी हैं। कायचिकित्सा (Medicine) के आचार्य अग्निवेश के शिष्य चरक, जिसने चरक संहिता लिखी है। शल्यचिकित्सा (Surgery) के आचार्य दिवोदास के शिष्य शुश्रुत, जिसने शुश्रुत संहिता लिखी है।

4.2 यजुर्वेद

वेदव्यास ने ऋग्वेद के आधार पर यजुर्वेद की रचना करके इसे अपने द्वितीय प्रिय शिष्य 'वैशम्पायन' को अध्ययन कराया था। इसके ऋत्विज् 'अध्वर्यु', देवता 'वायु', दृष्टा 'वैशम्पायन' हैं। यजुर्वेद के मन्त्रों का स्वरूप 'कर्मकाण्डात्मक' हैं। पतञ्जलि ने इसकी एक सौ एक शाखाएँ स्वीकार कीं हैं। यजुर्वेद, आदित्य तथा ब्रह्म इन दो सम्प्रदायों मे विभक्त है। आदित्य सम्प्रदाय का अपर नाम शुक्लयजुर्वेद तथा ब्रह्म सम्प्रदाय का अपर नाम कृष्णयजुर्वेद है। शुक्लयजुर्वेद की 15 शाखाएँ थीं। किन्तु आज मात्र दो शाखाओं का नाम ज्ञात है तथा वे ही दो शाखाएँ उपलब्ध हैं। प्रथम शाखा वाजसनेही शाखा या माध्यान्दिनी शाखा है।

वैदिक शब्दकोश निघन्टु के व्याख्याकार देवयज्वा अपने वैदुष्य से वाजसनि कहलाते थे। अत: इनकी सन्तति याज्ञवल्क को वाजसनेही कहा जाता था। याज्ञवल्क ने वैशम्पायन से यजुर्वेद का अध्ययन किया था। परन्तु गुरु-शिष्य के मध्य वैचारिक मतभेद होने पर वैशम्पायन ने प्रदत्त विद्या को याज्ञवल्क से वमन (Vomiting) करावा कर अपने शिष्यों को तित्तर बना कर इस वमन का पान करवा दिया था। कालान्तर मे यही वमन तैत्तरीयोपनिषद् के नाम से विख्यापित हुआ। अनन्तर याज्ञवल्क को तप द्वारा सूर्य से मध्यान्ह काल मे यजुर्वेद प्राप्त हुआ था। अत: इस शाखा का नाम वाजसनेही शाखा या माध्यान्दिनी शाखा कहलाया। इसमें 40 अध्याय व 1975 मन्त्र हैं। अन्तिम अध्याय मे प्रसिद्ध ईशोपनिषद् प्राप्त होता है। शुक्ल यजुर्वेद की द्वितीय शाखा काण्व शाखा है, जिसके द्रष्टा ऋषि काण्व हैं। इसमे 40 अध्याय तथा 2086 मन्त्र हैं। याज्ञवल्क कृत 100 अध्यायों वाला प्रसिद्ध शतपथ ब्राह्मण का सम्बन्ध पूर्वोक्त दोनों शाखाओं से है।

कृष्णयजुर्वेद की 86 शाखाएँ थीं। किन्तु आज चार का नाम ज्ञात है, तथा ये ही चार शाखाएँ उपलब्ध हैं, जिनका नाम तैत्तरीयशाखा, मैत्रायणीशाखा, कठशाखा, कपिष्ठशाखा है। तैत्तिरीय संहिता में 7 काण्ड, 44 प्रपाठक, तथा 631 अनुवाक् हैं, जिसका वर्ण्यविषय यज्ञीय कर्मकाण्ड (पौरोडास, याजमान, वाजपेय, राजसूय इत्यादि नाना यागानुष्ठान) का विशद वर्णन है। वेदों के एकमात्र सर्वातिशायी भाष्यकार सायण तैत्तिरीय शाखा के ही अनुयायी थे और उन्होने सर्वप्रथम तैत्तिरीय संहिता पर ही अपना वैदुष्यपूर्ण भाष्य लिखा। मैत्रायणी संहिता में 4 काण्ड, 54 प्रपाठक, 2144 मन्त्र हैं, जिनमें से 1701 मन्त्र ऋग्वेद के हैं। कठ संहिता में 5 खण्ड, 40 स्थानक, 843 अनुवाक्, 3091 मन्त्र हैं। कपिष्ठ संहिता अपूर्ण एवं बहुत अधिक त्रुटिपूर्ण उपलब्ध होती है।

यजुर्वेद से सम्बन्धित उपवेद धनुर्वेद है, जिसके प्रणेता विश्वामित्र हैं।

4.3 सामवेद

वेदव्यास ने ऋग्वेद के आधार पर नूतन वेद सामवेद की रचना कर अपने तृतीय प्रिय शिष्य 'जैमिनी' को इसका अध्ययन कराया। सामवेद के ऋत्विज् 'उद्गाता' तथा देवता 'सूर्य' हैं। सामवेद के मन्त्रों का स्वरूप 'गायनात्मक' है। पतञ्जलि इस वेद की 1000 शाखाएँ स्वीकार करते हैं। उन 1000 में से हम मात्र तीन शाखाओं (कौथुमीय, राणायनीय, जैमिनीय) के नाम जानते हैं। इन तीन शाखाओं में से भी आज मात्र कौथुमीयशाखा उपलब्ध है। सामवेद को पूर्वार्चिक तथा उत्तरार्चित

नामक दो भागों मे विभाजित किया जाता है। पूर्वार्चिक में 650 मन्त्र हैं तथा उत्तरार्चिक में 1225 मन्त्र हैं। मन्त्रों की कुल संख्या 1875 है। यदि 75 मन्त्रों को प्रथक् कर दिया जाए, तो शेष 1800 मन्त्र ऋग्वेद से ऋण स्वरूप लिए गए हैं। इन 1875 मन्त्रों मे 367 मन्त्र पुनरुक्त हैं। सर्वाधिक 09 ब्राह्मण ग्रन्थों का सम्बन्ध इसी सामवेद से है। सामवेद से सम्बन्धित उपवेद गान्धर्ववेद है, जिसके प्रणेता भरतमुनि हैं।

4.4 अथर्ववेद

वेदव्यास ने ऋग्वेद के आधार पर एक नवीन वेद अथर्ववेद की रचना कर अपने चतुर्थ प्रिय शिष्य 'सुबन्तु' को इसका अध्ययन कराया था। इस वेद को ब्रह्मवेद व अथर्वाङ्गिरस वेद के नाम से भी जाना जाता है। इसके द्रष्टा 'सुबन्तु', ऋत्विज् 'ब्रह्मा' तथा देवता 'सोम' हैं। अथर्ववेद के मन्त्रो का स्वरूप 'वशीकरणात्मक' है। पतञ्जलि इस वेद की 09 शाखाएँ स्वीकार करते हैं। अथर्ववेद एकलौता ऐसा वेद है जिसकी समस्त शाखाओं का नाम ज्ञात है जो कि निम्न हैं – 01 पिप्पल 02 शौनकीय 03 मौद 04 स्तोत 05 जाजल 06 जलद 07 ब्रह्मवद 08 देवदर्श 09 चारणवैद्य। विष्णु पुराण के अनुसार सुबन्तु ने कबन्ध को अथर्ववेद पढ़ाया। कबन्ध के दो शिष्य पथ्य एवं देवदर्श हुए। पथ्य के तीन शिष्य जाजलि, कुमुद और शौनक हुए तथा देवदर्श के चार शिष्य मोद, ब्रह्मवलि, पिप्पलाद और शौक्लायनि हुए। इन्हीं शिष्यों ने अथर्ववेद की प्रथक प्रथक शाखाओं का विभाजन किया।

पूर्वोक्त नवरत्न स्वरूप शाखाओं में से पिप्पल एवं शौनकीय मात्र दो ही शाखाएँ आज उपलब्ध हैं। पिप्पलाद शाखा में 20 काण्ड हैं तथा शौनक शाखा में 20 काण्ड, 731 सूक्त, 5987 मन्त्र हैं। इसमें लगभग 1200 मन्त्र ऋग्वेद से लिए गये हैं।

अथर्ववेद से सम्बन्धित उपवेद शिल्पवेद है, जिसके प्रणेता विश्वकर्मा हैं।

4.5 महाभारत

वेदों के सम्पादन से मुक्त होते ही वेदव्यास महाभारत की रचना में संलग्न हो गए थे। वेदव्यास ने पाण्डवों की विजय के उपलक्ष्य मे 'जय' नामक ग्रन्थ लिखा था, जिसकी श्लोक संख्या आठ हजार थी। तदनन्तर वेदव्यास ने अपने 'जय' नामक ग्रन्थ का विस्तार 24,000 हजार श्लोकों मे कर के इसे 'भारत' नाम से अभिहित किया। अनन्तर हरिवंश पुराण की रचना की गई। निश्चित ही यह पुराण अष्टादश पुराणों से भिन्न है। हरिवंश पुराण एवं भारत के संयोजन से 'महाभारत' नाम प्रचलित हुआ तथा इसके श्लोकों की संख्या एक लाख पहुँच गई। अत यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि जय, भारत एवं हरिवंश पुराण का संयुक्त रूप ही वर्तमान का महाभारत है। विश्वप्रसिद्ध ऑनलाइन शब्दकोश विकिपीडिया का मत है कि व्यास ने जय की तथा वैशम्पायन ने भारत की रचना की, बाद मे उग्रश्रवा ने इन्हें संयोजित करके महाभारत नाम दिया। विद्वानों का मत है कि महाभारत का नामकरण ईशा से कम से कम पाँच शताब्दी पूर्व हो चुका था। क्योंकि तत्कालीन साहित्य तथा उत्खनन में महाभारत शब्द का प्रयोग प्राप्त होता है। महाभारत के आदिपर्व से ज्ञात होता है कि वेदव्यास, गणेश से इस महाकाव्य के लेखन के लिए अनुरोध करते हैं, जिसे गणेश सशर्त स्वीकार करते हैं कि जब आप की जिह्वा रुक जाएगी तभी मैं लेखन कार्य समाप्त कर के लौट जाऊँगा। इस प्रकार से वेद व्यास निरन्तर तीन वर्षों तक बोलते रहे तथा गणेश लिखते रहे।

महाभारत मे अठारह पर्व क्रमश: निम्न हैं-

01 आदिपर्व	07 द्रोणपर्व	13 अनुशासनपर्व
02 सभापर्व	08 कर्णपर्व	14 अश्वमेधपर्व
03 वनपर्व	09 शल्यपर्व	15 आश्रमवासीपर्व
04 विराटपर्व	10 सौप्तिकपर्व	16 मौसलपर्व
05 उद्योगपर्व	11 स्त्रीपर्व	17 महाप्रस्थानिकपर्व
06 भीष्मपर्व	12 शान्तिपर्व	18 स्वर्गारोहणपर्व।

महाभारत का भीष्मपर्व, श्रीमद्भगवद्गीता का तथा शान्तिपर्व, विष्णु सहश्रनाम का उद्गम स्थल है। सम्पूर्ण विश्व में अब तक का सबसे बृहद् ग्रन्थ महाभारत है। समस्त भारतीय तथा अभारतीय काव्यों के मूल श्रोत तीन ग्रन्थ बाल्मीकि की रामायण, वेदव्यास का महाभारत एवं गुणाढ्य का बृहत्कथा माना जाता है। यह सुखद तथ्य है कि तीनों ही उपजीव्य ग्रन्थ भारतीय ज्ञान मनीषा से प्रादुर्भूत हुए हैं। महाभारत के विषय मे कहा गया है कि "यदिहास्ति तदन्यत्र, यन्नेहास्ति न तद् क्वचित्" अर्थात जो इस महाभारत में है वे ही तथ्य अन्य काव्यों में हैं, जो तथ्य इस में नहीं हैं वे अन्य काव्यादिओं में भी नहीं हैं।

4.6 पुराण

वेदव्यास ने महाभारत के बाद पुराणों का सृजन किया। यह निर्विवाद तथ्य है कि पुराणों की संख्या अठारह है। पुराणों का नाम अक्रमश: अधोलिखित है-

01 मत्स्यपुराण	07 ब्रह्मपुराण	13 नारदपुराण
02 मार्कण्डेयपुराण	08 वामनपुराण	14 पद्मपुराण
03 भविष्यपुराण	09 वाराहपुराण	15 लिङ्गपुराण
04 भागवतपुराण	10 विष्णुपुराण	16 गरुड़पुराण
05 ब्रह्माण्डपुराण	11 वायुपुराण (शिवपुराण)	17 कूर्मपुराण
06 ब्रह्मवैवर्तपुराण	12 अग्निपुराण	18 स्कन्दपुराण

4.7 उपपुराण

वेदव्यास ने पुराणों के बाद उपपुराणों का सृजन किया। यह निर्विवाद तथ्य है कि उपपुराणों की भी संख्या अठारह है। मात्र दो ग्रन्थों गरुड़ पुराण तथा देवी भागवत में उपपुराणों के नाम प्राप्त होते हैं। जिनमे उपपुराणों के नाम के विषय मे परस्पर मत विरोध है। अधोलिखित उपपुराणों के नाम गरुड़ पुराण के अनुसार दिये गए हैं जो कि रचना क्रम से नहीं हैं-

01 सनत्कुमार	07 कापिल	13 माहेश्वर
02 नृसिंह	08 वामन	14 साम्ब
03 स्कान्द	09 औशनस	15 सौर
04 शिवधर्म	10 ब्रह्माण्ड	16 पाराशर
05 आश्चर्य	11 वारुण	17 मारीच
06 नारदीय	12 कालिका	18 भार्गव

4.8 ब्रह्मसूत्र

वेदव्यास पुराणों एवं उपपुराणों के प्रणयन से निवृत्त होकर ब्रह्मसूत्र नामक दार्शनिक ग्रन्थ का लेखन प्रारम्भ करते हैं। वेदान्त दर्शन का मूल यही ब्रह्मसूत्र ग्रन्थ है। यह चार अध्यायों मे विभाजित है। ब्रह्मसूत्र पर आदि शङ्कराचार्य ने शारीरिक नामक भाष्य (व्याख्या) लिख कर अद्वैत सिद्धान्त, रामानुज ने श्रीभाष्य लिख कर विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त, माधवाचार्य ने पूर्णप्रज्ञ नामक भाष्य लिखकर द्वैत सिद्धान्त, निम्बार्काचार्य ने वेदान्तपारिजात नामक भाष्य लिख कर द्वैताद्वैत सिद्धान्त तथा बल्लभाचार्य ने अणुभाष्य लिख कर शुद्धाद्वैत सिद्धान्त की स्थापना की है।

5. उपसंहार

भारतीय ज्ञान परम्परा के प्रवर्तक वेदव्यास ने हमें अमूल्य निधियाँ प्रदान की हैं। जिनका भार भारतीय संस्कृति मे अधिकतम है। वेदव्यास के प्रति मात्र भारतीय समाज ही कृतकृत्यता का अनुभव नहीं करता है, बल्कि सम्पूर्ण अभारतीय समाज भी वेदव्यास के द्वारा लिखित वेदों के अनुसन्धानोपरान्त, संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (UNESCO) इसे विश्वविरासत स्वीकार करते हुए वेदव्यास के प्रति कृतज्ञता प्रगट करता है।

व्यास वैदिकपरम्परा, लेखनपद्धति, शास्त्रीय प्रणाली के प्रणेता हैं। व्यास का कृति संसार ही भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता आया है तथा भविष्य मे भी यथावत् करता रहेगा। मानवसभ्यता को स्वर्णिम योगदान के लिये इन्हें सर्वदा स्मरण किया जाता रहेगा। यदि आप व्यास को पढ़ना चाहते है तो व्यास के कृतिसम्पदा की सबसे लघु ग्रन्थरत्न 'गीता' को पढ़ सकते हैं। गीता को केवल व्यास के कृतिसम्पदा का सार ही नहीं माना जाता है, अपितु सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति की आध्यात्मिकता का भी प्रतिबिम्ब माना जाता है।

शोधकर्ता का मत है कि किसी महापुरुष के जन्म दिवस को किसी जयन्ती विशेष के रूप मे मनाने का प्रारम्भ इसी व्यास पूर्णिमा से होता है। क्योंकि इससे पूर्व हमे कोई भी दिवस ऐसा नहीं मिलता है, जिसे वेदव्यास के पूर्ववर्ती किसी महापुरुष के जन्म महोत्सव के उपलक्ष्य में मनाया जाता हो। जब पाश्चात्य जन भारत की सत्य सनातन अविरल अनिन्दित अनुपमेय अवर्णनीय अच्युत अविखण्डित अतुल्यनीय अविभाजित अमृततुल्य संस्कृति से परिचित हुए तब उन्होने भारतीय संकृति का अनुकरण करते हुये स्मृति दिवसों की स्थापना करना प्रारम्भ किया।

6. सहायकग्रन्थसूची

1. Albrecht Weber. The History of Indian Literature, London, 1882.
2. Arthur Anthony Macdonell. A history of Sanskrit literature, New York, 1900.
3. Arthur Berriedale Keith. A history of Sanskrit literature. Oxford University Press, London. 1920.
4. Friedrich Max Müller. A History of Ancient Sanskrit Literature, Williams and Norgate, London, 1859.
5. Gaurinath Shastri. A Concise History of Classical Sanskrit Literature, Calcutta, 1943.
6. Rudolf von Roth. On the literature and history of the Veda, Germany, 1846.
7. SD Joshi, JAF Roodbergen. Patanjali's Vyakarana Mahabhashya, University of Poona, Poona, 1986.
8. Wikipedia.
9. कपिल देव द्विवेदी, वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2000.
10. गजानन शास्त्री, राजेश्वर शास्त्री, वैदिक साहित्य का इतिहास, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 1989.
11. पार्श्वनाथ द्विवेदी, वैदिक साहित्य का इतिहास, वाराणसी, 2000.
12. बलदेव उपाध्याय, वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, शारदा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 1955.
13. राममूर्ति शर्मा, वैदिक साहित्य का इतिहास, दिल्ली, 1987.
14. वाचस्पति गैरोला, वैदिक साहित्य और संस्कृति, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1988.